



ISWK SHARING KNOWLEDGE



दुःख का अधिकार , कक्षा - 9



पुनर्कथन - RECAP





पुनर्कथन - RECAP





पुनर्कथन - RECAP





पृष्ठ संख्या page .no.(15 & 16)

लड़के की बुढ़िया माँ बावली होकर ओझा को बुला लाई । झाड़ना-फूँकना हुआ । नागदेव की पूजा हुई । पूजा के लिए दान-दक्षिणा चाहिए । घर में जो कुछ आटा और अनाज था , दान-दक्षिणा में उठ गया । माँ, बहू और बच्चे 'भगवाना' से लिपट-लिपटकर रोए,पर भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला । सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था । जिंदा आदमी नंगा भी रह सकता है ,परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए । उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा , चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाएँ ।

कठिन शब्दार्थ – बावली - mad ओझा – झाड़-फूँक करनेवाला
दान – दक्षिणा - donation एक दफ़ा – एक बार ,
मुर्दा – dead body, छन्नी-ककना – मामूली ज़ेवर





भगवाना परलोक चला गया । घर में जो कुछ चूनी-भूसी थी सो उसे विदा करने में चली गई । बाप नहीं रहा तो क्या , लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे । दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूजे दे दिए लेकिन बहू को क्या देती ? बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था । अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअन्नी-चवन्नी भी कौन उधार देता । बुढ़िया रोते-रोते और आँखें पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे डलिया में

समेटकर बाज़ार की ओर चली –और चारा भी क्या था ?

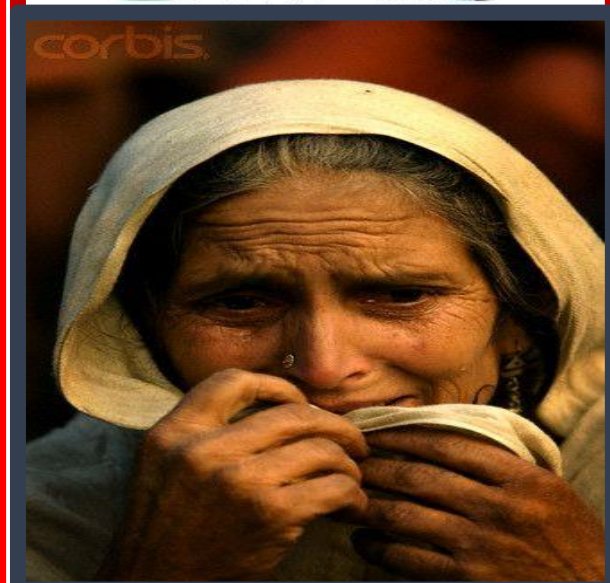
बुढ़िया खरबूजे बेचने का साहस करके आई थी , परंतु सिर पर चादर लपेटे, सर को घुटनों पर टिकाए हुए फफक-फफककर रो रही थी । कल जिसका बेटा चल बसा , आज वह बाज़ार में सौदा बेचने चली है , हाय रे पत्थर –दिल !

चूनी-भूसी –मोटे अन्न का पीसा हुआ चूर्ण , तवा – frying pan
पत्थर –दिल- stone-hearted



उस पुत्र वियोगिनी के दुःख का अंदाज़ा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुखी माता की बात सोचने लगा। वह संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अट्ठाई मास तक पलंग से उठ न सकी थी। उन्हें पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद पुत्र-वियोग से मूर्छा आ जाती थी और मूर्छा न आने की अवस्था में आँखों से आँसू न रुक सकते थे। दो-दो डॉक्टर हरदम सिरहाने बैठे रहते थे। हरदम सिर पर बर्फ रखी जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उस पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे।

कठिन शब्दार्थ - पुत्र वियोगिनी-the mother who has lost her son,
संभ्रांत - उच्च श्रेणी, मूर्छा - बेहोशी, सिरहाने - सिर की ओर,
द्रवित होना - दया दिखाना





जब मन को सूझ का रास्ता नहीं मिलता तो बेचैनी से कदम तेज़ हो जाते हैं। उसी हालत में नाक ऊपर उठाए, राह चलतों से ठोकरें खाता मैं चला जा रहा था।

सोच रहा था –शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और.....दुखी होने का भी एक अधिकार होता है।

सूझ–sense, **बेचैनी** – restlessness, anxiety,

ठोकर – dash, **शोक** – सदमा,

सहूलियत – सुविधा, facility





कुछ प्रश्न

1. पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला ?
2. लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए ?
3. बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई ?
4. उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था ?
5. इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है ?



ISWK SHARING KNOWLEDGE

धन्यवाद